

**“मीठे बच्चे – कदम-कदम बाप की श्रीमत पर चलते रहो, एक बाप से ही
सुनो तो माया का वार नहीं होगा”**

प्रश्न:- ऊंच पद प्राप्त करने का आधार क्या है?

उत्तर:- ऊंच पद प्राप्त करने के लिए बाप के हर डायरेक्शन पर चलते रहो। बाप का डायरेक्शन मिला और बच्चों ने माना। दूसरा कोई संकल्प तक भी न आये। 2- इस रूहानी सर्विस में लग जाओ। तुम्हें और कोई की याद नहीं आनी चाहिए। आप मुये मर गई दुनिया तब ऊंच पद मिल सकता है।

गीत:- तुम्हें पाके हमने.....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने यह गीत सुना। वो है भक्ति मार्ग का गाया हुआ। इस समय बाप इसका रहस्य समझाते हैं। बच्चे भी समझते हैं—अब हम बाप से बेहद का वर्सा पा रहे हैं। वह राज्य हमारा कोई छीन न सके। भारत का राज्य बहुतों ने छीना है ना। मुसलमानों ने छीना, अंग्रेजों ने छीना। वास्तव में पहले तो रावण ने छीना है, आसुरी मत पर। यह जो बन्दरों का चित्र बनाते हैं—हियर नो ईविल, सी नो ईविल.... इनका भी कोई रहस्य होगा ना। बाप समझाते हैं एक तरफ है रावण की आसुरी सम्प्रदाय, जो बाप को नहीं जानते हैं। दूसरी तरफ हो तुम बच्चे। तुम भी पहले नहीं जानते थे। बाप इनके लिए भी सुनाते हैं कि इसने भी बहुत भक्ति की है, इनका यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। यही पहले पावन थे, अब पतित बने हैं। इनको मैं जानता हूँ। अभी तुम और किसकी मत सुनो। बाप कहते हैं, मैं तुम बच्चों से बात करता हूँ। हाँ, कभी कोई मित्र-सम्बन्धियों आदि को ले आते हैं तो थोड़ी बात कर लेता हूँ। पहली बात तो है पवित्र बनना है तब ही बुद्धि में धारणा होगी। यहाँ के कायदे बहुत कड़े हैं। आगे कहते थे 7 रोज़ भट्टी में रहना है, और कोई की याद न आये, न पत्र आदि लिखना है। रहो भल कहाँ भी। परन्तु सारा दिन भट्टी में रहना पड़े। अभी तो तुम भट्टी में पड़कर फिर बाहर निकलते हो। कोई तो आश्चर्यवत् सुनन्ती, कथन्ती, अहो माया फिर भागन्ती हो गये। यह है बड़ी भारी मंजिला। बाप का कहना नहीं मानते। बाप कहते हैं तुम तो वानप्रस्थी हो। तुम क्यों मुफ्त में फँस पड़े हो। तुम तो इस रूहानी सर्विस में लग जाओ। तुम्हें और कोई की याद नहीं आनी चाहिए। आप मुये मर गई दुनिया तब ऊंच पद मिल सकता है। तुम्हारा पुरुषार्थ ही है—नर से नारायण बनने का। कदम-कदम बाप के डायरेक्शन पर चलना पड़े। परन्तु इसमें भी हिम्मत चाहिए। सिर्फ कहने की बात नहीं है। मोह की रग कम नहीं है, नष्टोमोहा होना है। मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। हम तो बाबा की शरण लेते हैं।

हम विष कभी नहीं देंगे। तुम ईश्वर तरफ आते हो तो माया भी तुमको छोड़ेगी नहीं, खूब पछाड़ेगी। जैसे वैद्य लोग कहते हैं—इस दवाई से पहले सारी बीमारी बाहर निकलेगी। डरना नहीं। यह भी ऐसे है। माया खूब सतायेगी, वानप्रस्थ अवस्था में भी विकार के संकल्प ले आयेगी। मोह उत्पन्न हो जायेगा। बाबा पहले से ही बता देते हैं कि यह सब होगा। जहाँ तक जियेंगे, यह माया की बॉक्सिंग चलती रहेगी। माया भी पहलवान बन तुमको छोड़ेगी नहीं। यह ड्रामा में नूँध है। मैं थोड़ेही माया को कहूँगा कि विकल्प न लाओ। बहुत लिखते हैं बाबा कृपा करो। मैं थोड़ेही किस पर कृपा करूँगा। यहाँ तो तुमको श्रीमत पर चलना है। कृपा करूँ फिर तो सब महाराजा बन जाएं। ड्रामा में भी है नहीं। सब धर्म वाले आते हैं। जो और-और धर्म में ट्रांसफर हो गये होंगे वह निकल आयेगे। यह सैपलिंग लगता है। इसमें बड़ी मेहनत है। नये जो आते हैं तो सिर्फ कहना है बाप को याद करो। शिव भगवानुवाच। कृष्ण कोई भगवान नहीं है। वह तो 84 जन्मों में आते हैं। अनेक मत, अनेक बातें हैं। यह बुद्धि में पूरा धारण करना है। हम पतित थे। अब बाप कहते हैं तुम पावन कैसे बनो। कल्प पहले भी कहा था—मामेकम् याद करो। अपने को आत्मा समझ देह के सब धर्म छोड़ जीते जी मरो। मुझ एक बाप को ही याद करो। मैं सर्व की सद्गति करने आया हूँ। भारतवासी ही ऊंच बनते हैं फिर 84 जन्म ले नीचे उतरते हैं। बोलो, तुम भारतवासी ही इन देवी-देवताओं की पूजा करते हो। यह कौन हैं? यह स्वर्ग के मालिक थे ना। अभी कहाँ हैं? 84 जन्म कौन लेते हैं? सतयुग में तो यही देवी-देवता थे। अभी फिर इस महाभारत लड़ाई द्वारा सबका विनाश होना है। अभी सब पतित तमोप्रधान हैं। मैं भी इनके बहुत जन्मों के अन्त में ही आकर प्रवेश करता हूँ। यह पूरा भक्त था। नारायण की पूजा करता था। इनमें ही प्रवेश कर फिर इनको नारायण बनाता हूँ। अब तुमको भी पुरुषार्थ करना है। यह डीटी राजधानी स्थापन हो रही है। माला बनती है ना। ऊपर में है निराकार फूल, फिर मेरू युगला शिवबाबा के नीचे एकदम यह खड़े हैं। जगतपिता ब्रह्मा और जगत अम्बा सरस्वती। अभी तुम इस पुरुषार्थ से विष्णुपुरी के मालिक बनते हो। प्रजा भी तो कहती है ना—भारत हमारा है। तुम भी समझते हो हम विश्व के मालिक हैं। हम राजाई करेंगे, और कोई धर्म होगा ही नहीं। ऐसे नहीं कहेंगे—यह हमारी राजाई है, और कोई राजाई है नहीं। यहाँ बहुत हैं तो हमारा तुम्हारा चलता है। वहाँ यह बातें ही नहीं। तो अब बाप समझाते हैं—बच्चे, और सब बातें छोड़ मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। ऐसे नहीं कोई सामने बैठ निष्ठा (योग) कराये, दृष्टि दे। बाप तो कहते हैं चलते-फिरते बाप को याद करना है। अपना चार्ट रखो — सारे दिन में कितना याद किया? सवेरे

उठ कितना समय बाप से बातें की? आज बाबा की याद में बैठे? ऐसे-ऐसे अपने से मेहनत करनी है। नॉलेज तो बुद्धि में है फिर औरों को भी समझाना है। यह किसकी बुद्धि में नहीं आता है कि काम महाशत्रु है। 2-4 वर्ष रहकर फिर माया का थप्पड़ जोर से लगने से गिर पड़ते हैं। फिर लिखते हैं बाबा हमने काला मुँह कर दिया। बाबा लिख देते काला मुँह करने वाले को 12 मास यहाँ आने की दरकार नहीं है। तुम बाप से प्रतिज्ञा कर फिर भी विकार में गिरे, मेरे पास कभी नहीं आना। बड़ी मंजिल है। बाप आये ही हैं पतित से पावन बनाने। बहुत बच्चे शादी कर पवित्र रहते हैं। हाँ, किसी बच्ची पर मार पड़ती है तो उनको बचाने लिए गन्धर्वी विवाह कर पवित्र रहते हैं। उसमें भी कोई-कोई को तो नाक से माया पकड़ लेती है। हार खा लेते हैं। स्त्रियाँ भी बहुत हार खा लेती हैं। बाप कहते हैं तुम तो सूपनखा हो, यह सब नाम इस समय के ही हैं। यहाँ तो बाबा कोई विकारी को बैठने भी न दे। कदम-कदम पर बाप से राय लेनी पड़े। सरेन्डर हो जाए तो फिर बाप कहेंगे अब ट्रस्टी बनो। राय पर चलते रहो। पोतामेल बतायेंगे तब तो राय देंगे। यह बड़ी समझने की बातें हैं। तुम भोग भल लगाओ परन्तु मैं खाता नहीं हूँ। मैं तो दाता हूँ। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. माया पहलवान बन सामने आयेगी, उससे डरना नहीं है। मायाजीत बनना है। कदम-कदम श्रीमत पर चल अपने ऊपर आपेही कृपा करनी है।
२. बाप को अपना सच्चा-सच्चा पोतामेल बताना है। ट्रस्टी होकर रहना है। चलते-फिरते याद का अभ्यास करना है।

वरदान:- स्वयं के संकल्पों की उलझन अथवा सजाओं से भी परे रहने वाले पास विद आनर भव

पास विद आनर अर्थात् मन में भी संकल्पों से सजा न खायें। धर्मराज के सजाओं की बात तो पीछे है परन्तु अपने संकल्पों की भी उलझन अथवा सजाओं से परे रहना — यह पास विद आनर होने वालों की निशानी है। वाणी, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क की बात तो मोटी है लेकिन संकल्पों में भी उलझन पैदा न हो, ऐसी प्रतिज्ञा करो तब पास विद आनर बनेंगे।

स्लोगन:-

ज्ञान घृत और योग की बत्ती ठीक हो तो खुशी का दीपक जगता रहेगा।